

- Title –
- Accession No – Title –
- Accession No –
- Folio No/ Pages – 6/12
- Lines-
- Size
- Substance Paper –
- Script Devanagari
- Language – अवधी
- Period –
- Beginning –
- End –
- Colophon-
- Illustrations -
- Source -
- Subject - साहित्य (रामचरितमानस / रामायण से सम्बन्धित)
- Revisor -
- Author -
- Remarks- अपूर्ण

Gowri

रनैकी डोरी सुनैगी कान आवैगी मिता वचेर उपजन सुलखिया
५६ क०॥ हहै वनमाल घटा मेली भई मी सजसुनते नेटा आवन है लाज
हनूफाट चीर तनकी॥ कैरमे रहत जोर जानता है करर लोट प्रभु बिनाको
ऊन सहाय दुखी जन को॥ नाम लेय पुकारे जन सुनत नाहीं लखि
पाहै घुराइ पीलवाली यसु भ्रमको॥ मैलो रोइ जोर जाव कृपा हो हजो
र जार काहे नलगैग हार आइ लछमनको॥ ५७॥ दो०॥ सालपा चे ओल
ह अमुख गानन यकहीन जात॥ रानीजी रघुनाथ की मापे पूछी वा
त॥ ५८॥ क०॥ हार अरज करी हनूमान सीताजू सों आइ हन लाच
मा हद केर मूल लागकी॥ सीताजू सारन बनाए फल नोर खाइ औ
र. नह ... ने कोपकै रह अगनकी॥ अंचल अगाजपाइ आगदा ५९
नो सीजग वेसु ... मपामाई ... जवूत पूव कलीलु वागकी॥ ... ०१.

ता बल्ला कैं लाई लछमन सों। कहै तो हकार मारों गर्बन के मर्दे तारोंगान सों
को चल मारों अपने छिकन कौं सो। कहै तो दस सिर दह हूं दिसा कैं अंदेदै
के सिघर जारो कर अंगुरन सों। कहइ तो लपेट लंगर सो वगा कं लंक जे से
चलावे मे ता कों कै गोप थन सों॥ ६०॥ कवित्त॥ [illegible] बीर बांदर बकाई तेरी
कहा कहूं राम लै छमन के ब बरन्या नहई हइ। मै तो बराई आधी न परी हो
के बसरा वन की औधलि कट आनि लई हइ। मेरी सह चरी चंद व ततमदा
जी बंस मतिन हूं सो बीग दी नी सु नी बात नई हइ। का के आगे कहू तो हनू
कौ नइ ल बार करइ लषह [illegible] हलते के नी दला मगडे हइ॥ ६१॥ कवित्त॥ रा
नी नी लि लारी ने दाहि [illegible] कीप कसंग हो इ सोई बसी सखि [illegible] जी
कों कलि नाही ज सबि न प [illegible] नों न लगे बोलत रहे अबि मा। लेखा हे हग
मबोर औसे मेंगयाहइ गरि आ [illegible] नहीं ठौर फेरकाहू सषिया। रावनके मा

...हरनामा
...पत्र ३ ॥

की ॥८॥ दोहरा ॥ बिधि पूरब रघुनाथ की [illegible] कह्यो हाराम । आप
न मोहि सको । नृप चले कर हार ॥ १० ॥ कवित्त ॥ मुनी अरण्य बाल
लीनो कुलपूज माथ साज के [illegible] कानु सब घोरे ६.
। जहा सोबड़ी तनार [illegible] सैन [illegible] नको हारमा
नो मंमपबनायो है । नबा [illegible] लाछ जोर [illegible] तेप रत हैके
ढी मोषा बचार धोहल नबसिह धेप दायो हड़ ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ हाथ
घोरे रथ छत्र । नृपन नमन अपार । दासदासी [illegible] मंगादै । जनु कि
करी मनुहार ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ लछुपन सीता माह के । चले आप
ने धाम । मारग में जग मग [illegible] लो । पर मराम जिह नाम ॥ १३ ॥
कवित्त ॥ आयो जनद [illegible] कै मो सुजन के मोते जनलीये कुअन
कुमार रूप में सिंघ हलो [illegible] ड़ । मारो हड़ नह अजोहे लीनो ।

२.

मागसुमि नवरी ॥६॥ कवित्त ॥ आगेहारेषजाहिहरनहीएमाहपाछेमसुंदरकु
मारर छवरहै। लोएहह [illegible] कोलाहपूछलहइ लाहूपाह चलालउनिक
टराइनहालेरोवरहै। मारगमेलयोसरता बमउ [illegible] इछोरहसतन
सामलायोएकसरहइ। हेबोअमनीचकोजोसुकृतआयो बीच। ओसी
पाई मीचफुनिमीचकोनकरूहइ ॥७॥ दोहरा ॥ कृषकेकालसमा
रहस। कीनेजकृतमाम। फुनिकोनिगरघुनाथके। माफलनकरूकेधा
म ॥८॥ कवित्त ॥ जनककेस्वयंबरमेरामजाइगाढेलएजानकीवि
चारेयानवामीसुताफुरकी। कोमनकुवबजानकै [illegible] चेलकमा
नकरइहे सिकाय तिसपीयनमांपदरैकी। [illegible] चाकली
ना। रघुनाथहाथगयोकाके पापुनिकै [illegible] दोनी [illegible] क
मीसजोरहमास्योहइ धनुषतारसौ [illegible] सारमानि [illegible] कर

रामा
य ण प
४

बेयो। पांयन कों बबे बो जहा लो जा बचल्यो जाइ आगे तिन जाइ सौ
संगले लिबे हीसों। तब मन नृ को [illegible] पल सो जिन देखन को आवे को
ऊ कनत तेस देसो बसा कहियो। [illegible] लो न लजाइ गाव के तो लिक
टपूत मेर बन बासी मेरी सुध लै मेर ही।।२७।।कबित्त।। बाहे बरबी
रर घुबी रमेश धीर को मल सगी [illegible] मारी ले बधारो हइ। बाडे गज
बाजरथ बाहन के कुमार बनको बिलकल मारग बिचारो हइ। देखो
नाहि दुष्मे रो सुधी या [illegible] मह के कंद मूल बाइ के दिन जो लगारो हइ
। तिन रसो चत दुर चिन जइ सेर बुरान आन मेरे हो ना हो नी बिछो नाबि
न पारो हइ।।२५।।कबित्त।। को रा ल्यो के पाय जोग बन को चले हइ रा
मसी लाल हे मन संग ता बन्ह की कदर को पुत्र के बिछो हइरा जो जसरथ
पबार बाय अंध कै सा लो ग्यो सर के न सरको सहत न प्राम लोग राय

४

नादसरखुसरसनहीं। सूकि...योयहकासं। औरलखीगुफता... 6
नि। बलहि...का ओराम ॥२०॥ दोहरा॥ करताकरइसुनाटेर्से। का
जेकोटइलोउ। रामचलेबनबासको। लरथुकरलेहराज ॥२१॥ दो
हरा॥ दइसिरमारनकारने। जेकीनीसबघात। कौ।लगाभीरघु
नाथके। कहिवेकीनहीबात ॥२२॥ कवित्त॥ कोनजडुकोनदान
गीरथुतपस्याकोनकोननेमबतकीनोनातेऐसोसुतपायोहइ।
कोझुलाकेलाभाकीबकाइदेसुमैजिनउडरलोइपालनेझुलो
योहइ। जहाजपैकमाकेतका...नह...वैसेतकपाकोलिकटेना
लिकुमलसेलुराधोहइ। ताकई नटरैपरै ऐसेहोनहारदई के
कहकहइतेरामबनकोपठायोहइ ॥२३॥ कवित्त॥ जानकीन
हारसंगजातनानाथकेदुखुआकोमनलाडबेटाबनमां...

राम

है कि [illegible] जो [illegible] सलीली [illegible] ॥ इ [illegible]
॥ कहै [illegible] ॥ आलाहु [illegible]
[illegible] जा [illegible] दोस ठेर [illegible] पी है कै दि [illegible] सा
नौ [illegible] ॥ इ [illegible] थिवा [illegible] रामसेवार [illegible] सारै [illegible]
दे॰ ॥ वाचनेके हौ वि [illegible] सुमार नषोधाय लौकिरनव दुनल्ली गया
वनी है॥ कैते कैकमेर खरउठ [illegible] रननमध्य मानै कै सुमार [illegible] ठर
समाह पापी रहै॥ ९८॥ दो॰ ॥ सुध जमी नैरंग भइ वे सुमार [illegible]
ग चंदने क [illegible] हि हीनो है॥ वाजे फील्ले कलवार मारघा [illegible] है वनवुरर
जहा लौ रावरा नौ [illegible] जे वुक जंभात काली नाचत वजा वैनाल्ली आवसुस्या
लीवी धगोसत्र धानो है॥ फासीक पटले वीरवा ९९ व [illegible] आपनो ॥
॥ हुकम [illegible] दोर का वजाइ आनो है॥ १०० ॥ दो॰ आनाप करहजूर ॥

२

…दरमा
…पत्र
९

नवे ल्यो महावली हरसा ल जान वे न के चे दजवा। फरते ज्वा ववेला ल
॥१२॥ के॰। कोरे वदराइ मीठी वोदरवनु माइ आछ मेवा खाए कवलो
देखभ काजवे॥ सिना के सिवाए वाग। कियो ते तमाम राग जा के का रे
वाउ का मवार होहरै जार वार कीए हमा जके। ऐसे ऐसे खुदा ला
प लीयो है गुरामला प कुर है समुद्र बिना चढ ही जहाज वे॥ करी
ऋ है। सिता वी खूबजा नाले महाल मया मरक बूल ऐसे आने खास बाज
९ वे॥१३॥ क॰। कोर है ते बुरे काम आपा नहीं भूओ वा है दे का ए नाही ला
१ जँषा उनमाता तो है अवहीं पहल है॥ सीताने चुराया नहीं। चितवा
को दौरत है टारी तो पेली लते नदल है॥ तैसो पठायो वद ही कोरत नहा
नैसबे हलेन तो कोनो। वद ही ओ खुजल है॥ पायगा बुराइ को ने
वीजावे जहां दजरत जान की फिकार कर बाग की सई न है॥१४॥ ३

सुंदरमा
यरत्नस
९

नके महाइ कहे तेतौ कहहु आउ लाइ दिष राम नार कों ॥ ५४ ॥ दोहरा ॥ नाग
सुता पहि लेहु हे । पा डेहो तन वाल । हनूमान लंका गयो । राम चंद के का
ज ॥ ५५ ॥ कवित्त ॥ सीता को निबाय मुद्रिका दीया कहइ अंग ठौ हाय कही हइ सब
बात रघुपति जु बान की । लई है जु मालर रानी जैसे माली या बेया नी आवे कब
जानी बु जोष बरह कान की । चंद जी बिधाता के बिरोध की न जानी जाइ
मिटे है न रेज गति कमल पिरे मान की । करी हइ दिला साह नूमान ने हज
र बार हाय गा उहाँ हवा न ऐसे असुर बान की ॥ ५६ ॥ कवित्त ॥ जानकी
पिय की बनी या सुनी आ तिय के दग अंबु जदार रवरी । कय आप हि जाइ रे
जो बन लाइ के दोरंद मोति सिला वकरी । बादी कहइ हो बिदेह लई को जे
संग नही ने कन धीर धरे । अब सा जी कहइ सुन बीर हनूर घुनाथ ब हइ
कोन हरे ॥ ५७ ॥ कवित्त ॥ रानी जी रमू जपा ऊंच वहीलो पलाये पाकप हरा ॥

२

चंद्र देषो विषम लीजो मैसें ते नटरी है ॥ पद्य ॥ दोहरा ॥ [illegible]
॥ करि जनकी नी वपरीत कौन के मीर घुनाथ के [illegible] ॥ ६ ॥
॥ कबित्त ॥ पवन कुमार ज्ञंद को रजाइ दीनी राम [illegible] बन [illegible]
वेगा मलाम सिवै पावदे छलाहो [illegible] मलो ल
वेगा सहर [illegible] तमाम फिरे फूह तेई [illegible] रहालदे कै धावेगा मुरलो ह
यालल ईहई तेरे हाथ जानकी केली बलेकी षबजो सुनावेगा ॥ पद्य ॥ दोह
रा ॥ करत सलाम बिदा सयो नेकन मानी संक सागर कंधा छिनक में सा
नो लाषपंष ॥ पद्य ॥ कबित्त ॥ अंजनीको मनाव लीधाइ के पलाउ चढ्यो देष
ता हुइ इ [illegible] कूदा चाहै पार को देव जंगला [illegible] रेपाथर निबाड मार
प ताल को पुकार करी षबर जिमी दार को लगे पवन के झकोरे गिर ग
ए रूप सारे कलमले जीव जंद जाया [illegible] हइ पार को जैले हनुमा

रामा
पत्र ३

इ कहु लछ कौन मामा आन ना कोइ हू मयी सो कहु । जानन्तो । कहु भ
लकै लसमान सो गत रे लाई मादर मार नो है मन ही की सो कहु ॥१६॥
दोहरा ॥ [illegible] ते न ठूटो नाही । बूह न [illegible] आन । जालिम कट गड
दुहुन को । [illegible] नी मन तनलिदान ॥१७॥ दोहरा ॥ राम न जो छमा अ
इ को । बीमत बहुत बिलास । कुनपाठे ऐसी मुनी । राघव को बन
बास ॥१८॥ कवित्त ॥ पूछे के ते जूमी पूबमं धीन सो म लाह कीनी
राज को तिलक को कहु राम जी को दीजीये । होलो करो बनोबास
लीजे [illegible] बास बदरहो आइ कंटक [illegible] नो जमजी जीये । छित
बलक न हल न माहि के कडई न म [illegible] करी पाउ में इनाम फोडे
लाय कर पंकी जीये । बाराबरस [illegible] राघव बन बास बरहइ
आवे जो हया तसे ती पुनः राज कीजीये ॥१९॥ दोहरा ॥ ३

है ॥ पिता को बैर वाके औ आगे वास काहू हाथ नहीं आवै है ॥ जब वि-
सपकंठ नंनन को अलकी नोटी नो राज कृस्नन को जो [illegible] नो है ॥
। जाके जाने बुरो नाही कोऊ ऐसो को न सुघ रूप जोध नृप जिन लो
रो है ॥ १४ ॥ कबित्त ॥ परम पुनीत समीतर हो है जगत जीते भूति कीऊ
नीत करी तुम को न लोरो है ॥ कीने है दुगुनाह जिन पाई मजाई ऐसी सु
द लीगुनाह कहा साधु मारबो है ॥ लै जम सम मान को कहत छि आप-
आपद टीलो कमान को सने हथीत तो रो है ॥ तुम हि जमू जलाल सुनी
है बकपेह बात जाकी साहेब की जड हाथ सो करतो है ॥ १५ ॥ क-
बित्त ॥ नाम के तो जम्मन मदन के तो महा बाहु हाथ वो [illegible] नजि
ए लीयो है । बीच यों बनाई सिध है नन सों बैर स्यो को कऊ [illegible] क मा सो
को कऊ ला जब पग यो है ॥ कहे नन के ओर महा पर स[illegible]म क[illegible] तो बना

